रूठे सजन मनाइये
जो रूठे सौ बार

सुषमा मुनींद्र

रूठे सजन मनाइये, जो रूठे सौ बार

सुषमा मुनीन्द्र

अनुक्रम:

कहानी	पृष्ठ संख्या
खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ	3
न नजर बुरी, न मुँह काला	14
नाम में बहुत कुछ रखा है	29
रूठे सजन मनाइये, जो रूठे सौ बार	34

खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ

पहला धक्का ..... फिर दूसरा ..... फिर तीसरा ..... धक्के पर धक्का .....।

सन्मति मानो अम्मा को धक्का देने ही आई है। अब तो उन्हें आदत हो गई है सन्मति धक्का दे। नहीं देती है तो कमी लगती है। वैसे इस बार का धक्का, धक्का जैसा नहीं है। धक्का कहना चाहें तो ऐसा उपयोगी धक्का है जो ठेलम ठेल कर आगे बढ़ने के लिये जरूरी होता है।

धक्के पर धक्का .....

तीन पुत्रियों के मध्य इकलौता चिराग पुरोधा। अम्मा को अपने इकलौते पर नाज रहा है। जबकि पुरोधा को अम्मा की नाज भावना की फिक्र नहीं। होती तो सन्मति से प्रेम करने की नादानी फिर विवाह करने की जिद न पकड़ लेता। सदा संतप्त दिखने वाला अम्मा का मुख अधिक संतप्त हो गया। अम्मा के मुख का संताप जब-जब बढ़ता है उनके माथे पर कुछ सलवटें जिन्हें शक या संदेह कहा जाता है, उभर आती हैं।

अम्मा अपने मुख के संताप और माथे की सलवटों के साथ कहने लगीं -

''सन्मति बहुत आधुनिक है पुरोधा।''

''इसीलिये मुझे पसंद है अम्मा।''

''पसंद करने का यह बड़ा अजीब कारण है।''

''कुछ भी अजीब नहीं है अम्मा। मैं अपनी पसंद के कपड़े पहनता हूँ, अपनी पसंद का खाता हूँ। अपनी पसंद के विषय चुने। अपनी पसंद के लोगों से मिलता हूँ। शादी अपनी पसंद की क्यों नहीं कर सकता? शादी बार-बार का मामला नहीं है जो कर ली, ठीक न जमा तो साल दो साल में दूसरा घर देखने चल पड़े।

''इस आधुनिक से शादी करोगे तो साल दो साल में दूसरा घर जरूर देखना पड़ेगा। सन्मति जैसी बालकटी लड़कियाँ परिवार में फिट नहीं होतीं। अरे अब तो वे बहुयें भी ऐंठी रहती हैं जिन्हें लोग घरेलू किस्म की समझते हैं।''